Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्री सेठिया जैनग्रन्थालय (शास्त्रभण्डार) ग्रन्थमाला

पुष्प नं० ५०

ज्ञान भंडार
जार इन्दौर

* श्रीवीतरागाय नमः *

नीतिदीपक शतक,

(भाषानुवाद-सहित)

प्रकाशकः—

भैरोंदान जेठमल सेठिया

बीकानेर

यह पुस्तक यत्न से रक्खें और व्यवस्थित पढ़ें

कीमत दो आने
जो भी ज्ञानखाते में
डालेंगी

प्रथमावृत्ति
२०००

वीर निर्वाण सम्वत् २४५२
विक्रम सम्वत् १९८२
ई० सन् १९२५

श्री जैन प्रिंटींग प्रेस शाकद्वीपीय मरोड़ियों का बीकानेर 15-10-25 2000

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सेठिया जैनग्रन्थमाला की पुस्तकें:—

सामायिकसूत्र मूल पाठ तथाविधि रु०)॥
प्रतिक्रमण मूलपाठ और विधि रु० —)
प्रकरण (थोकडा) संग्रह भाग दूसरा पक्कीजिल्द रु० १)
सामायिक शब्दार्थ, भावार्थ, और कोषसहित रु० =)
प्रतिक्रमणसूत्र-शब्दार्थ, भावार्थ, विधिसहित रु० ≡)
तैंतीस बोल का थोकड़ा रु० —)
जैन बालोपदेश रु० =)
प्रस्तार रत्नावली (इस में गांगेय अनगार के भांगे, श्रावकव्रत के भांगे और आनुपूर्वी के भांगे हैं) पत्राकार पृष्ट २८० पक्कीजिल्द रु०१।=)
कर्तव्यकौमुदी द्वितीय भाग हिंदी सानुवाद रु० ।—)
क्रिया कर्म वैराग्य रु० —)॥
श्रावक के बारह व्रत रु०=)॥
गुणविलास (विविधप्रकारस्तवन) रु० ॥।)
मांगलिक स्तवन संग्रह भाग पहला रु० =)॥
" " " " दूसरा रु० —)॥
नंदीसूत्र मूल पाठ रु० ।=)
नमिराज्यव्रज्या-अन्वयार्थ भावार्थ संस्कृत छाया सहित रु०≡)
महावीरस्तुति " " " " रु०—)॥।
बृहदालोयणा रु०)॥।
जैनसिद्धान्तकौमुदी पक्कीजिल्द रु०१॥)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीपार्श्वनाथाय नमः

॥ नीतिदीपिका ॥

(भावार्थसहित)

मङ्गलाचरणम्

शार्दूलविक्रीडितवृत्तम्

यद्वाक्चन्द्रिकया चकोरचरिताश्चारित्रिणश्चित्रकृ-
च्चारित्रा वत चिन्मयेऽचलमते सभ्योधिता बोधतः
भव्यानां भवजालभीतमनसामज्ञानमुन्मीलितं
सोऽव्याद्वो वृषलाञ्छनो वृषपतिः श्रीमद्युगादिप्रभुः॥१॥

जिन आदिनाथ भगवान् की वाणीरूप चन्द्रमा की चांदनी को चारित्रधारी पुरुष चकोर के समान आचरण करते हैं, तथा जिन्होंने उत्तम संयमियों को ज्ञान द्वारा निश्चल चैतन्य मत में स्थापन कियाहै, और जिनके वृषभ का चिह्न है, ऐसे धर्म के पति—श्री आदिनाथ स्वामी तुम्हारी रक्षा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कवि अपनी लघुता प्रकट करते हैं-

सन्तः सन्ततमेव सन्तु सरलाः सद्बोधहीनस्य मे,
मूढस्यापि सदा प्रसन्नमनसः सर्वत्र सदृष्टयः।
किंवा संहरते कदापि किरणान्ह्लादसंवर्द्धका-
श्चीचानामपि वेश्मनोऽमृतनिधिर्नेत्रचूडामणिः॥

मैं बोधहीन हूं, सज्जन पुरुष मेरे साथ सदा सरलता का व्यवहार करें, क्योंकि उदार पुरुष मूर्ख पर भी सदा प्रसन्नचित्त रहते हैं। क्या तारागण का चूड़ामणि चन्द्रमा अपनी आनन्द देनेवाली अमृतमयकिरणों को चाण्डाल आदि नीचपुरुषों के घर से संकोच लेता है?॥२॥

भव्यजीवों के प्रति हितका उपदेश-

आयुः साधनमन्तरेण विफलं वर्गत्रयोत्पादकं,
नृत्वं प्राप्य सुदुर्लभं बहुतपः साध्यं वृथा मा कृथाः
धर्मो रक्षति दुर्गतेर्नरवरं सिद्धिं च सम्पादयन्,
कामार्थावपि वर्द्धयेद्धितकरौ कृत्वा वशे तौ यतः॥३॥

जिसने धर्म अर्थ और काम पुरुषार्थ का साधन नहीं किया है, उसका मनुष्यजन्म पाना निष्फल है। यह मनुष्यपर्याय अत्यन्त दुर्लभ है, इस को व्यर्थ नहीं खोना चाहिये। लेकिन इस से तपश्चर्या का पालन करना चाहिये, क्योंकि धर्म ही मनुष्य को दुर्गति से बचाता है और मोक्ष देता है। तथा काम- इन्द्रियसुख और अर्थ- धन की प्राप्ति भी इसी के आधीन है अर्थात् संसारी जीवों को सुखदायी अर्थ और काम है, इन की प्राप्ति भी धर्म से ही होती है,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इसलिए धर्म अर्थ काम और मोक्ष इन चारों पुरुषार्थ की सिद्धि का मुख्य उपाय एक धर्म ही है ॥३॥

प्राप्यैतन्नरजन्म दुर्लभतरं धर्मं न ये कुर्वते,
ते क्लेशाय भवेयुरेव तनयाः पित्रोः कुलस्याऽऽधयः।
लब्धं कल्पतरुं विहाय सुखदं नानाप्रमादान्विताः,
धत्तूरं हि कठोरकण्टकयुतं संशोधयन्ते भ्रमात्॥४॥

जो मूर्ख अत्यन्त दुर्लभ मनुष्य जन्म को पाकर धर्म का सेवन नहीं करते हैं, वे केवल अपने माता पिता को कष्ट के लिये हुए हैं, और कुल को पीड़ा देने वाले हैं, तथा ऐसे प्रमादी-आलसी मनुष्य प्राप्त हुए सुखकारी कल्पवृक्ष को त्याग कर सुख के लिए तीखे कांटे वाले धतूरेको ढूंढते हैं ॥४॥

मनुष्यजन्म की सर्वोत्कृष्टता—

पात्रे रत्नमये पदं कलुषितं प्रक्षालयेन्मन्दधीः,
पीयूषेण स वाहयेत्करिवरं काष्ठाश्ममृत्कण्टकान्।
काकानुड्डयितुं क्षिपेत्करतलाच्चिन्तामणिं सागरे,
दुष्प्रापं नरजन्म यो गमयति व्यर्थं प्रमादादिभिः॥५॥

जो प्राणी इस दुर्लभ मनुष्य जन्म को पाकर आलस्य विषय कषाय निद्रा आदि में गँवाता है, वह मूर्ख रत्नके पात्र में अमृत से मैले पैर धोता है। हाथी पर कांटे मिट्टी काठ पत्थर लादता है। हाथ में रखे हुए चिन्तामणि रत्न को काग उडाने के लिये समुद्र में फेंकता है ॥५॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धर्म को त्याग कर विषयसेवन में जीवन बिताने वाले मनुष्य की मूर्खता-

ते पीयूषघटं विहाय मतनं गृह्णन्ति हालाहलं,
ते तिष्ठंति शिलातले जलनिधौ त्यक्त्वा नि:कस्थां तरिम्
स्वारामे निवपन्ति कण्टकतरूनुन्मूल्य कल्पद्रुमे.
ये धर्मं परिहृत्य लब्धमनिशं धावन्ति कामाशया:॥६॥

जो मूर्ख धर्म को त्यागकर निरन्तर विषयभोग में लीन रहते हैं, वे अमृत घट को छोड़कर हलाहल- विष को ग्रहण करते हैं, समुद्र पार करने के लिए पास में रक्खीहुई नावको छोड़ कर शिलापर सवार होते हैं, तथा कल्पवृक्ष को उखाड़कर अपने बगीचे में कांटे के वृक्ष बोते हैं ॥६॥

संसार समुद्र को पारकरने के लिए धर्म और गुरु की आवश्यकता-

संसाराम्बुनिधौ मनोरथशतोद्वेल्लत्तरङ्गाकुले,
दारा ऽपत्यकुटुम्बनक्रबहुले धर्मस्वरूपा तरि:।
तिष्ठन्त्यत्र समाधिशान्तमनसो ये मानवा: प्रेमत-
स्ते पारं द्रुतमेव यान्ति निकटे चेत्कर्णधारो गुरु:

संसार समुद्र के समान है, इसमें अनेक मनोरथ रूपी महाभयानक लहरें उठाकरती हैं, और यह स्त्री पुत्रादि कुटुम्बरूपी मगर घड़ियाल आदि हिंसक जलचर जन्तुओं से भरा हुआ है। इस संसार समुद्र को पार करने के लिए एक धर्मरूपी नौका है। जो मनुष्य इस संसार में

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निराकुल और शान्तचित्त से रहते हैं, वे खेतड़िया के समान सद्गुरु को पाकर अतिशीघ्र पार होते हैं ॥७॥

हिंसा आदि पापों और क्रोधादि कषायों को रोकने की आवश्यकता—

भक्तिर्देवगुरौ तथा जिनमते सङ्घे विनाशं गता,
हिंसाद्याश्रवपञ्चकेन रिपुभिर्व्याप्तं क्रुधाद्यैः परम्।
सौजन्यं गुणिसङ्गमोऽक्षदमनं दानं तपो भावना,
वैराग्यं परमापकार्श्यमधुना कार्यं हि तत्पोषणम् ॥

हिंसा असत्य चोरी अब्रह्म(कुशील)और परिग्रह इन पांच आश्रवों (पापों)ने देव गुरु जैनधर्म और संघ की भक्ति का नाश कर दिया है। सज्जनता को क्रोधादि शत्रुओं ने दबा रक्खा है, तथा गुणवान् पुरुषों की सङ्गति, इन्द्रियों का दमन, दान, तप, भावना और वैराग्य इस समय अत्यन्त क्षीण हो गये हैं, इसलिए इन का पालन पोषण करना चाहिये ॥८॥

अरिहन्त भक्ति से होनेवाले लाभ—

अर्हद्भक्तिनभोमणौ समुदिते ऽज्ञानान्धकारो महा-
न्हृद्यत्यत्र मनोऽम्बुजं विकसति प्रोद्बोधितानां नृणां।
खेदं कश्मलघूकलोकनिचयः प्राप्नोति चान्ध्यं मह-
न्म्लानिं मोहमहाभिमानकुमुदान्यामादयन्ति क्षणात् ॥

अरिहन्त भक्तिरूप सूर्यका उदय होने पर जीवों का अज्ञानान्धकार दूर होता है, उपदेश को ग्रहण करने वाले मनुष्यों का हृदयकमल

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खिल जाता है, उल्लूस्वरूप पापी लोग अन्धे हो जाते हैं तथा खेद को प्राप्त होते हैं, और मोह अभिमान रूप कुमुद पुष्प तत्काल मुर्झा जाता है ॥९॥

स्वर्गस्तत्सदनाङ्गणे सहचरी साम्राज्यसम्पन्मुदा,
युक्ता तत्तनुमन्दिरे गुणगणा राजन्ति मान्या बुधैः।
मोक्षश्रीः करगा भवस्तु सुतरस्तत्सन्निधौ लब्धयो,
यः शुद्धेन हृदाम्बुजेन विधिना भक्तिं करोत्यर्हताम् ॥१०॥

जो मनुष्य शुद्ध हृदय- कमल से विधिपूर्वक अरिहन्त देव की भक्ति करता है, उसके स्वर्ग, घरके आंगन समान निकट है। राज्यलक्ष्मी हर्षपूर्वक उस पुरुष के साथ साथ गमन करती है। विद्वानों से आदर करने योग्य गुण इकट्ठे होकर उसके शरीर को अपना घर बनालेते हैं, मोक्षलक्ष्मी हथेली में रखीहुई वस्तुके समान हो जाती है। वह पुरुष संसारको सुखपूर्वक तिरता है, तथा ऋद्धियाँ उसके पास बनी रहती हैं ॥१०॥

जिनपूजा का महात्म्य-

नातङ्कोऽस्य कदापि याति सदनं भूपस्य चाण्डालव-
दारिद्र्यं बहुदूरतस्तिमिरवद्दृष्ट्वा रविं नश्यति।
एनं प्रोज्झति दुर्गतिश्च कुदशा दुष्टेव स्वीयं पतिं,
यः सर्वार्पणरूपपूजनविधिं भावाद्विधत्ते जिने ॥११॥

जो मनुष्य सब वस्तुओं का अर्पण करके जिनेन्द्र भगवान् की पूजा भाव से करते हैं, उन के घर में कभी रोग संताप प्रवेश नहीं करता है; जैसे राजा के घर में चाण्डाल प्रवेश नहीं कर पाता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिसतरह सूर्य को देखकर अन्धकार मिट जाता है, इसी तरह भगवान् की पूजा करने वाले का दारिद्र्य बहुत दूर भाग जाता है। जैसे दुष्ट स्त्री अपने पति को छोड़ देती है, इसी प्रकार दुर्गति और कुदशा जिन पूजक पुरुष को त्याग देती है ॥११॥

स्नानं भावजलैर्विलेपनमथो तद्बोधसच्चन्दनैः,
पुष्पैः शुद्धमनोमयैश्च सततं ध्यानेन धूपं तथा।
दीपं ज्ञानमयं शमाज्यनिभृतं कृत्वा जिनस्यार्चनां,
ये कुर्वन्ति निरञ्जनस्य नितरां धन्या मतास्ते जनाः
॥१२॥

शुद्धभावरूप जल से स्नानकर ज्ञानरूप उत्तम चन्दन का लेप करे। पवित्र मानसिक विचाररूप पुष्प चढ़ाकर ध्यान रूप धूप खेवे, तथा शान्ति रूप घृत से भरा ज्ञानमय दीपक जलावे। इसप्रकार जो मनुष्य कर्मकलङ्करहित- निरञ्जन जिनेन्द्र भगवान् की पूजा करते हैं, उनको धन्य है ॥१२॥

चार श्लोकों द्वारा गुरुभक्ति का वर्णन करते हैं.-

सन्मार्गे परिवर्त्तते स्वयमथाऽन्यान्वर्त्तयत्यस्पृहः
सद्बोधेन भवाम्बुधिं तरति योऽन्यांस्तारयत्यादरात्।
शान्तः सत्यशुचिर्दयालुरभयो यः सद्गुणैर्मण्डितः।
सेव्यः स्वीयहितैषिणा गुरुवरः संसारसन्तारकः ॥१३॥

जो स्वयं सत्यमार्ग पर चलते हैं, और निः स्वार्थ बुद्धि से दू-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सरों को भी चलाते हैं। सम्यग्ज्ञान द्वारा स्वयं संसारसमुद्र से पार होते हैं, और दूसरों को भी अतिप्रेम से पार करते हैं। जो शांतचित्त निर्लोभी दयालु निर्भीक तथा उत्तमगुणों से भूषित हैं, वे ही संसार से पार करने वाले सद्गुरु हैं। आत्महितेच्छुओं को ऐसे गुरुओं की सेवा करनी चाहिये ॥१३॥

सर्वां नाशयते कुबुद्धिमचलां शास्त्राणि संश्रावय--
न्भूयः सद्गतिदुर्गती शुभमनाः संदर्शयत्यादृतः।
कृत्याकृत्यविभेदकृच्छिवपथं स्पष्टं व्यनक्ति स्वयं,
संसाराम्बुधिपोत एव स गुरुर्नान्योऽस्ति कश्चित्ततः
॥१४॥

गुरु शास्त्र सुनाकर आत्मा के सुदृढ़ मिथ्याज्ञान को दूर करते हैं। प्रेमपूर्वक शुद्धहृदय से सद्गति और दुर्गति के स्वरूप को दिखाते हैं। कर्त्तव्य तथा अकर्त्तव्य का भेद दिखाकर मोक्षमार्ग का स्पष्ट व्याख्यान करते हैं। ऐसे ही गुरु संसार समुद्र से पार करने के लिए जहाज के समान हैं, दूसरे नहीं ॥१४॥

मायायत्तहृदः कुबुद्धिकुटिलव्यापारपूर्णादरा
दारापत्यधनादिमुग्धमनसः संसारिणोऽसज्जनाः।
दुर्वारे नरकान्धकूपकुहरे पापैः पतन्त्यंजसा,
तानुद्धर्तुमलं न कोऽपि चतुरः शान्तं विना सद्गुरुम्।१५।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मायाचारी दुर्बुद्धि बुरे कामों में तत्पर, स्त्री पुत्र धनादिक में अत्यन्त आसक्त दुर्जन मनुष्य, पाप उपार्जन करके नरकरूप भयानक अन्धे कुएमें अवश्य पतन करते हैं। उनका उद्धार करने के लिए शान्तस्वभावी सद्गुरु के सिवा दूसरा कोई समर्थ नहीं है ॥१५॥

गुरु की आज्ञा का महात्म्य -

किं त्यागेन कषायितेन सततं ध्यानेन किं धर्मतः,
किं वा भावनया तथाऽक्षदमनैः सत्सङ्क्रमैः किं फलम्।
शुद्धं शासनमन्तरा वरगुरोः संसारनिर्णाशकं,
कारुण्यामृतपूरपूरितहृदः सर्वार्थसंदर्शिनः ॥ १६ ॥

जिसका हृदय करुणा रूपी अमृत से परिपूरित है, और जो सम्पूर्ण जीवों को हितकारी उपदेश देते हैं, ऐसे सुगुरु की आज्ञा का पालन करने से संसार का नाश होता है। गुरु की आज्ञा का पालन किये बिना क्रोधादि कषाय का त्याग करना, निरन्तर ध्यान धरना, धर्म का पालन करना, शुभ भावना भाना, इन्द्रियों का दमन करना, तथा सत्पुरुषों की सङ्गति करना सब निष्फल है ॥ १६ ॥

जिनागम की महिमा-

सत्यासत्यविचारणां शुभतरां कर्तुं समर्था न ते,
तत्त्वातत्त्वपृथक्कृतिं गुणवतीं ते नो विधातुं क्षमाः।
कार्याकार्यगुणागुणं स्वमनसः जानन्ति नो ते जना
ये युक्तपङ्क्तिवीतरागवचनं शृण्वन्ति नो श्रद्धया ॥१७॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जो मनुष्य युक्तिसिद्ध वीतराग के वचनों को श्रद्धापूर्वक नहीं सुनते हैं, वे सत्यासत्य का निर्णय नहीं कर सकते। उन में तत्त्व अतत्व का निर्णय करने की शक्ति नहीं रहती, तथा कार्य अकार्य और गुण औगुण को नहीं पहचान पाते हैं ॥ १७ ॥

तावत्संसृतिजं भयं भवभृतां तावन्मनोमोहकृ-
त्तावद्वैरपराभवोऽतिबलवांस्तावत्कषायोद्गमः।
तावद्दुर्गतिगामिता जनिजुषां तावत्प्रपञ्चव्यथा,
यावज्जैनमते निरञ्जनपदे लग्नं न चित्तं मुदा ॥ १८॥

जब तक परमपुनीत जैनधर्म में जीवों का हार्दिक प्रेम नहीं होता है, तब तक ही संसार का भय रहता है, तब तक ही तीव्र कषाय का उदय कलह और अपमान होता है, और तब तक ही कुगति में गमन तथा संसार सम्बन्धी पीड़ा होती है ॥१८॥

खद्योते खगधीर्मनोहरमणौ भ्रान्तिश्च काचेऽमले,
मुक्ताहारमतिर्भुजङ्गमवरे फेनेषु शय्यामतिः।
शत्रौ मित्रमतिः सुहृद्यरिमतिः श्वेवेडे च पीयूषधी-
र्येषां जैनमतं विहाय कुमतान्यालम्यते मानसम् ॥१९॥

जिनका चित्त जैनमत को छोड़कर अन्य कुमतों में प्रवृत्त होता है ,उनको जुगनू में सूर्य की भ्रान्ति होती है। निर्मल काच में मनोहर मणि का प्रतिभास होता है। साँप में मुक्ताहार का भ्रम होता है। फेन में शय्या का भास होता है। तथा शत्रु में मित्रबुद्धि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

और मित्र में शत्रुबुद्धि, एवं विष में अमृत की भ्रान्ति होती है। अर्थात् उनको सब उलटा ही प्रतिभास होता है ॥१९॥

सद्बोधामृतनिर्झराय विमलज्ञानप्रदीपाङ्कुरै-
र्नष्टाज्ञानमहान्धकारततिने कल्याणसम्पादिने।
दुष्कर्मौघमहाविषद्रुमवनच्छेदे कुठाराय त-
च्छ्रीमज्जैनमताय दुष्टजयिने नित्याय नित्यं नमः॥

सम्यग्ज्ञानरूप अमृत के झरने के समान, निर्मल ज्ञान रूप दीपक की किरणों से महान् अज्ञानान्धकार को नाश करने वाले, कल्याण के कर्त्ता, तथा दुष्कर्मों के समूहरूप विषवृक्षों के वन को काटने के लिए कुठार के समान, एवं कुवादियों को जीतनेवाले सनातन श्रीमज्जैनधर्म को मैं सदा नमस्कार करता हूं ॥२०॥

संघ की महिमा-

मेरू रत्नचयस्य शुद्धगमनं तारागणानां सतां,
नाकः कल्पमहीरुहां वरसरः श्वेतच्छदानां ततेः।
अम्भोधिः पयसां विधुश्च महसां स्थानं गुणानामसा-
वित्यालोच्य विधीयतां भगवतः संघस्य सेवाविधिः
॥२१॥

जैसे रत्नों का उत्पत्तिस्थान मेरु पर्वत, तारागण का भ्रमणस्थान आकाश, कल्पवृक्षों की निवासभूमि स्वर्ग, कमलपुष्पों का उत्पत्तिस्थान सरोवर, जल का आधार समुद्र तथा किरणों का आश्रय चन्द्रमा है, इसी तरह समस्त गुणों का आश्रय चतुर्विध संघ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(मुनि आर्यिका श्रावक श्राविका) है। ऐसा विचार कर जिनेन्द्र भगवान् के उक्त चतुर्विध संघ की सेवा-भक्ति करनी चाहिये॥२१॥

संघः कल्पतरुः सदैव भजनात् संघः स चिन्तामणिः,
स्वेष्टं दुर्लभमप्युपार्जयति यत्सेवावशात्सज्जनः।
संघोऽसौ बलिदुष्टकर्मदलने दक्षः पविर्दुःखभि-
त्संघो जैनमते सदा विजयते दारिद्र्यदावानलः॥२२॥

सदा सेवन किया गया यह संघ, कल्पवृक्ष और चिन्तामणि-रत्न के समान मनोवांछित पदार्थ को देनेवाला है। इसकी सेवा करके सज्जन पुरुष अत्यन्त दुर्लभ इष्टवस्तु को पाते हैं। यह संघ प्रबल दुष्टकर्मों का नाश करने में प्रवीण है। तथा दुःखों का नाश करने के लिए वज्र के समान, और दारिद्र्य को जलाने के लिए दावानल के समान है। इस प्रकार उक्तगुणों से भूषित यह चतुर्विध संघ जैनमत में सदा जयवंत रहता है॥ २२॥

धर्मोऽसौ सुरपादपस्सुमुनयः शाखाश्चरित्रोत्तमाः,
पत्रौघो मुनिबोधवाक्यनिचयः पुष्पं तपः शोभनम्।
छाया जीवदया च मूलममलः संघस्तु रक्ष्यो यतो-
मूले नाशमुपागते दलशिखापुष्पोद्गमो नो भवेत्॥२३॥

धर्म कल्पवृक्ष के समान चिन्तित पदार्थ को देने वाला है। चारित्र पालने वाले तत्त्वज्ञानी मुनि इस धर्मकल्पवृक्ष की शाखा हैं। मुनीश्वरों के हितोपदेश इसके पत्ते हैं। पवित्र तपस्या पुष्प तथा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छह काय के जीवों की दया इसकी छाया है, और निर्दोष संयम मूल-जड़ है। वृक्ष की जड़ नष्ट होजाने पर पत्ते फूल शाखा आदि की उत्पत्ति नहीं हो सकती है, इस लिए धर्म कल्पवृक्ष को सदा हरा भरा रखने के लिए संयम की पूरी तरह रक्षा करनी चाहिये ॥२३॥

मुक्ता रत्नवरैर्विभाति बहुभी रत्नाकरो वीचिभि-
र्नागः सन्मणिभिः सती स्वपतिनाऽहश्चित्रभानोः करैः।
यौदैवैः क्षणदेन्दुना सुयशसा ते सद्गुणा देहिनां,
तद्वत्सद्वृमणिर्विभाति विमलो धर्मेण सत्यात्मना ॥२४॥

जैसे सुन्दर सुन्दर रत्नों से मोती, बहुत सी लहरों से समुद्र, श्रेष्ठ मणियों से नाग, अपने पति से सती-पतिव्रता स्त्री, सूर्य की किरणों से दिवस तथा देवों से स्वर्ग, और चन्द्रमा से रात्रि, एवं सुयश से प्राणियों के गुण शोभा पाते हैं। इसी प्रकार सत्यधर्म से निर्मल संयम रूप मणि शोभा पाती है ॥२४॥

अहिंसा- दया की महिमा–

संसाराम्बुधिनौश्च दुष्कृतरजःसङ्घाशवात्या श्रियां,
दूती मुक्तिसखा सुबुद्धिसहजा दुःखाग्निमेघावली।
निःश्रेणी त्रिदिवस्य सर्वसुखदा यास्त्यर्गला दुर्गते-
र्जीवेषु क्रियतां दयाऽत्रमपरैः कृत्यैरशेषैर्जनाः ॥२५॥

हे भव्यजीवो! जीवदया संसाररूपी समुद्र को तिरने के लिये नाव के समान, और दुष्कर्म रूपी रज को उड़ाने के लिए

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आंधी के समान है। यह लक्ष्मी की दूती और मुक्ति की सखी है। सुबुद्धि की बहिन और दुःखाग्नि को शान्त करने के लिए मेघ पङ्क्ति के समान है। स्वर्ग पर चढ़ने के लिए निःसरणी और दुर्गतिका द्वार बन्द करने के लिए आगल के समान है। इसलिए हे सज्जनो! सब से पहले जीवों पर अनुकम्पा करो। इस के विना सब धार्मिक क्रियाएँ निष्फल हैं ॥ २५ ॥

पाषाणस्तरतात्सरित्पतिजले काष्ठां प्रतीचीं श्रये-
त्सस्तांशुः शिशिरोऽनलो भवतु वा मेरुश्चलत्वासनात्।
भूपीठं गगने प्रयातु दृषदि स्यादम्बुजानां जनि-
र्जन्तूनां हननं कदापि सुकृतं सूते न दुःखापहम् ॥२६॥

यदि पाषाण समुद्र के जल पर तैरने लगे, सूर्य पश्चिम दिशा में उदय होने लगे, अग्नि शीतल हो जावे, मेरुपर्वत अपने स्थान को छोड़ दे, पृथ्वीतल आकाश में चला जावे, पत्थर पर कमल उत्पन्न होने लगें, इत्यादि असंभव बातें भी कदाचित् संभव हो जायँ, तौ भी हिंसा से कभी दुःख को नाश करनेवाला पुण्यकर्म उत्पन्न नहीं हो सकता ॥२६॥

कैवल्योदयकारिणी भवबतां संतापसंहारिणी,
सद्वृत्तपद्मविहारिणी कृतिहरा दीनात्मनां देहिनाम्।
सद्बोधामृतधारिणी क्षितितले नृणां मनोहारिणी,
जीयाज्जीवदया सतां सुखकरी सर्वार्थसंदायिनी ॥२७॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जीवदया केवलज्ञान को उत्पन्न करने वाली तथा संसारीजिवों के संताप को दूर करनेवाली है। शुद्धहृदयरूपी कमल में विहारकरनेवाली तथा दीन प्राणियों के कर्म का क्षय करनेवाली है। पृथिवी पर सम्यग्ज्ञान रूपी अमृत की वर्षा करनेवाली, तथा सज्जनों को सुख देनेवाली और समस्त इष्ट प्रयोजन को सिद्ध करनेवाली है। इसप्रकार मन को प्रसन्न करने वाली दया संसार में चिरकाल तक जीवित रहे ॥२७॥

अभ्यस्ता निखिलागमा बहुतपः क्लेशेन सम्पादितं,
दत्तं दानमनर्घवस्तुबहुलं शश्वत्सुपात्रे मुदा।
भक्तिर्या स्वगुरौ जिने बहु दृढं संसाधिता यत्नतो,
हिंसां चेच्छ्रयते तदाऽखिलमिदं नृणां भवेन्निष्फलम्

जिसने सम्पूर्ण आगम का अभ्यास कर लिया,तथा अनेक कष्ट सहकर बहुतेरी तपस्या की। बड़ी उमंग से सदा उत्तम पात्र को अमूल्य सुन्दर पदार्थों का दान दिया, तथा वीतरागदेव और परिग्रहरहित गुरु की बड़े परिश्रम से पूर्ण सेवा-भक्ति भी की; यदि वह मनुष्य हिंसा का आचरण करे, तो उसके उक्त सब शुभकार्य निष्फल हो जाते हैं ॥२८॥

देवैः पूजितमुद्धिकुत्सुजनतासञ्जीवनं सन्मतं,
मुक्तेः केलिवनं प्रभावभवनं श्रेयस्करं पावनम्।
कीर्तेः साधनमाधिभिच्छुभधनं विश्रम्भसम्पादकं,
सन्मन्तोषकरं सदा विजयते लोकेऽत्र सत्यं वचः॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सत्य वचन बोलने वालेकी देव पूजा करते हैं, तथा उसे अनेक ऋद्धियां प्राप्त होती हैं। सत्य वचन से सज्जनता प्रकट होती है। यह सत्य पवित्र है, तथा मुक्तिरूपी स्त्री के क्रीड़ा करने का उद्यान है। प्रभुता तथा कल्याण को उत्पन्न करनेवाला है। कीर्त्ति का विस्तार करनेवाला तथा मानसिक पीड़ा का नाश करनेवाला है। यह सत्यवचन संसार में उत्तम धन है, तथा विश्वास को उत्पन्न करनेवाला है। ऐसा सत्य वचन संसार में सदा विजय को प्राप्त हो ॥२६॥

धत्तेऽहीनपतिस्तरुर्बहुफलं सत्येन भूमिः स्थिरा
सत्यात्सिन्धुरपांपतिर्न हि कदाप्यत्येति वेलामसौ।
सत्यान्मेरुमहीधरः स्थिरतरः स्तम्भो दरीदृश्यते,
सेव्यं सत्यवचस्ततोऽखिलजनैर्यत्नेन लोकस्थितिः॥

सत्य के द्वारा वृक्ष बड़े बड़े सांपों को आश्रय देता है और बहुत फलोंको धारण करता है। सत्य से समुद्र मर्यादा का कभी उल्लंघन नहीं करता है। सत्य से ही मेरु पर्वत हमेशा स्थिर रहता है। समस्त संसार सत्य के आश्रित है। इसलिए सत्य वचन की उपासना करनी चाहिए ॥३०॥

सम्पत्क्षुद्रसरिन्निदाघदिनकृत्तेजो विपद्वल्लरी-
मेघाम्बूज्ज्वलसद्यशःसुविपिने दावानलं दुःसहम्।
श्रेयःश्रीसुलतागजं भयकरं पापर्द्धिमूलं परं,
मिथ्यावाक्यमिदं वदन्ति च कथं ये पुण्यवन्तो जनाः

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यह असत्य वचन, सम्पत्तिरूपी लक्ष्मी नदी को सुखाने के लिये ग्रीष्म ऋतु के प्रचण्ड सूर्य के तेज के समान, कीर्तिरूपी लता को सींचने के लिए मेघ के जल के समान है, उज्ज्वल सुयश रूपी हरे भरे वन को भस्म करने के लिए प्रबल दावाग्नि के समान है, कल्याणलक्ष्मी रूपी लता का नाश करने के लिए मदोन्मत्त हस्ती के समान है, और पाप का मूलकारण है। ऐसे असत्य वचन को पुण्यात्मा पुरुष कैसे बोल सकते हैं? ॥३१॥

तस्याम्भो ज्वलनः स्थलं जलनिधिर्मित्रं रिपुः किङ्करा
देवाः पूर्विपिनं गृहं गिरिपतिर्माल्यं फणी केशरी।
सारङ्गोऽस्त्रमहो भवेदम्बुजदलं कोष्ठा मृगारिर्विषं
पीयूषं विषमं समं वदति यः सत्यं वचः पावनम् ॥३२॥

बड़े आश्चर्य की बात है कि जो पवित्र सत्यवचन बोलता है, उसके अग्नि जलसमान हो जाती है, समुद्र स्थलसमान, तथा शत्रु मित्रसमान हो जाता है। देव सेवक के समान, तथा वन नगर के समान हो जाता है। पर्वत घर के समान, तथा सर्प माला के समान हो जाता है। सिंह मृग के समान, तथा बाण आदि अस्त्र कमल के पत्ते समान हो जाते हैं। व्याघ्र खरगोश के समान, तथा विष अमृत के समान हो जाता है ॥३२॥

अचौर्यव्रतकी महिमा—

सिद्धिस्तं वृणुते सुकीर्त्तिरमला तस्मै ददात्यादरं,
तं सम्पत्सकला समेति न कदाऽप्यूर्व्यां भवार्तिश्च तम्।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दारिद्र्यं न विशेत्तदीयसदनं दोषाश्च दूरे ततः,
कुर्युः सख्यमनेन सज्जनगणा यः स्तैन्यहीनो जनः ॥३३॥

जो मनुष्य चोरी नहीं करता है, उसको सिद्धि अपना वर बना लेती है। निर्मल कीर्त्ति उससे प्रेम करती है। सम्पूर्ण सम्पत्ति उसके पास आजाती है। चोरी नहीं करनेवाले को पृथिवी पर कभी कष्ट नहीं होता। उसके घर में दरिद्रता प्रवेश नहीं कर सकती, तथा दोष उससे सदा दूर रहते हैं, इसलिए सज्जन पुरुषों को चोरी नहीं करने वाले के साथ मित्रता करनी चाहिए ॥ ३३ ॥

नादत्ते सुकृती ह्यदत्तमिह यस्तं श्रीः श्रयत्यम्बुजं,
हंसीवासितमम्बुदं तडिदिव श्लाघा तमालिङ्गति ।
सूर्योद्रात्रिरिवातिदूरमपयात्यंहोव्रजोऽस्माज्जना-
द्विद्यासक्तमिवैति तं गुणगणा ये सर्वसौभाग्यदाः ॥३४॥

जो पुण्यात्मा मनुष्य स्वामी की आज्ञा के विना दूसरे की वस्तु नहीं लेता है, लक्ष्मी उसकी इस प्रकार सेवा करती है, जैसे हंसनी कमल की सेवा करती है। कीर्त्ति उसका इस प्रकार आलिङ्गन करती है, जैसे बिजली काले मेघ का आलिङ्गन करती है। चोरी नहीं करने वाले के पाप इस प्रकार दूर होजाते हैं, जैसे सूर्य का उदय होने से रात्रि दूर होजाती है। जितने सौभाग्यादि उत्तम उत्तम गुण हैं, वे सब चोरी के त्याग करने वाले को इस तरह प्राप्त होजाते हैं, जैसे विद्या परिश्रमी पुरुष को प्राप्त होती है ॥३४॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चोरी से हानि--

कीर्तिः कालमुपैति कल्मषततिस्फूर्तिं परामृच्छति,
लज्जा लीनतरा भवत्यपि सुखं लीनं व्यथा वर्द्धते ।
क्रूरा पापमतिर्भवत्यतितरां भीतिर्भवेत्सर्वतः,
स्तेये बुद्धिमतां महत्यपि लघौ किं किं न दुःखं भवेत् ॥

चोरी करने वाले की कीर्ति नष्ट होजाती है। पापपुञ्ज अधिक बढ़जाता है, लज्जा विलीन होजाती है। सुख का नाश होता है और दुःख बढ़ता है। क्रूर पापबुद्धि पैदा होती है, तथा चारों ओर से भय प्राप्त होता है, अतः चोरी छोटी हो या बड़ी बुद्धिमानों को उससे कौन कौनसा दुःख उत्पन्न नहीं होता है ॥३५॥

नित्यं दुर्गतिमार्गविस्तृतिपरं सद्दर्पणं भूतिभि-
स्तुष्णाम्भोरुहचन्द्रिकाविलसनं पापद्रुवर्षोदकम् ।
मानग्लानिकरं वृषद्रुदहनं दैन्यप्रदं दुःखकृ-
त्तस्तैन्यं सर्वविपत्तिदं भयकरं हेयं हितेच्छावता ॥३६॥

चोरी सदा दुर्गति के मार्ग को चढ़ाकर दोषों को उत्पन्न करती है। ऐश्वर्य का नाश कर पुण्यरूपी कमल का संकोच करने को चन्द्रमा की चांदनी के समान है, तथा पाप रूपी वृक्ष को हरा भरा रखने के लिए वर्षा के जल के समान है। सन्मान को मलीन कर धर्मरूपी वृक्ष को जलाने वाली है। दीनता तथा दुःख को उत्पन्न कर सम्पूर्ण विपत्तियों की जननी है। आत्महित की इच्छा रखने वालों को ऐसी भयङ्कर चोरी का त्याग करना चाहिये ॥३६॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शील का भङ्ग करने से हानि--

लोके लेप्य मिपातिताऽपि विमला कीर्तिः पताकां निजां,
दत्ता मुक्तिपुरी दृढा कुमतिना गाढं कपाटार्गला ।
दावाग्नी रचितोऽतिगौरवपदे स्वीये गुणारामके,
स्वीयं शीलमनर्घमेव सुखदं येन प्रलुप्तं मदात् ॥३७॥

जिसने कामभद में आकर सम्पूर्ण सुख को देनेवाले अमूल्य शीलव्रत का भङ्ग कर दिया, उस दुर्बुद्धि ने संसार में अपनी निर्मल कीर्तिरूपी ध्वजा नीचे गीरा दी । मुक्तिरूपी नगर के दर्वाजे में दृढ़ आगल लगा दी, तथा आत्मगौरव को बढ़ानेवाले गुणरूपी बगीचे में दावाग्नि लगा दी है ॥३७॥

ब्रह्मचर्य का पालन करने से लाभ--

तेषां व्याधिशतं प्रयाति विलयं तापक्रमं नश्यति,
श्रेयस्सन्ततयो भवन्ति सततं सान्निध्यगाः सुराः ।
कीर्तिर्मण्डति मण्डलं दशदिशां धर्मो यशायां सदा,
वृद्धिं गच्छति याति पापपटली ये शीलसंभूषिताः ॥

जिनका आत्मा शील से भूषित है, उनके सैकड़ों रोग दूर हो जाते हैं । शरीर मन और वचन से होनेवाले दुःख अदृश्य हो जाते हैं । ब्रह्मचर्य पालनेवालों का जीवन सुख से बीतता है । उनकी देव सदा सेवा करते हैं । उनकी कीर्ति दशों दिशाओं में फैलती है । उनका धर्म हमेशा बढ़ता रहता है, तथा पापपुञ्जवि लीन हो जाता है ॥ ३८ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नूनं नाशयते कलङ्कनिकरं पापाङ्कुरं कृन्तति,
सत्कृत्यात्सवमाचिनोति नितरां ख्याति तनोति ध्रुवम्।
हन्त्यापत्तिविषादविघ्नवितति दत्ते शुभां सम्पदं,
मोक्षस्वर्गपदं ददाति सुखदं सद्ब्रह्मचर्यं धृतम् ॥३९॥

उत्तमगति से पालन किया गया शीलव्रत कलङ्कसमूह को नाश करता है। पापके अंकुर को छेदन करता है। आदर सत्कार को बढ़ाता है। संसार में प्रतिष्ठा उत्पन्न करता है। आपत्ति दुःख और विघ्न का घात करता है। यह ब्रह्मचर्यव्रत उत्तम सम्पत्ति को देता है, तथा क्रम से स्वर्ग और मोक्ष के सुख का अनुभव कराता है ॥३९॥

अग्निस्तोयति कुण्डली स्रजति वा व्याघ्रः कुरङ्गायते,
वज्रं पद्मदलायते सुरगिरिः पाषाणति क्ष्वेडकः।
पीयूषत्यनिशं हितत्यरिगणो व्याधिर्विनोदायते,
विघ्नौघोऽपि महायते हि महता शीलप्रभावाद्ध्रुवम् ॥४०॥

दृढ़ शील पुरुषों के शील के प्रभाव से अग्नि जल के समान शीतल तथा सर्प पुष्पमाला समान बन जाता है। सिंह मृग के समान अहिंसाकारी, तथा वज्र कमल के पत्ते के समान कोमल हो जाता है। सुमेरु पर्वत पाषाण के समान सुगम, तथा विष अमृत के समान सुख देनेवाला हो जाता है। शत्रु सदा के लिए मित्र बन जाता है, तथा व्याधि सुखरूप और विघ्न उत्सवरूप होजाते हैं ॥४०॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परिग्रह से हानि—

अंहः सञ्जनयन्कृपाकमलिनीं क्लिश्नन्समुन्मूलयन्,
धर्मद्रुं खलु लोभसागरमहो संवर्द्धयन्नुद्रुजन् ।
मर्यादातटमादिशन् शुभमनोहंसप्रवासं परं
किं वृद्धो न सदा परिग्रहसरित्पूरः परं कष्टकृत् ॥ ४१ ॥

परिग्रह रूपी नदी का पूर पाप को उत्पन्न करता है। कृपा-रूपी कमलिनी का नाश करता हुआ धर्मरूपी वृक्ष को मूल से उखाड़ फेंकता है, लोभरूपी समुद्र को बढ़ाता हुआ, मर्यादारूपी तट को तोड देता है,तथा शुभविचार रूपी हंस को दूसरे देशमें भगा देता है। जब साधारण परिग्रहरूपी नदी का प्रवाह इतने कष्टों को उत्पन्न करता है, तब वृद्धि को प्राप्त हुआ परिग्रह कौन से बड़े कष्टको नहीं देता है?॥ ४१ ॥

विन्ध्यः क्लेशगजे दवाग्निरनिशं सत्कृत्यरूपे वने,
वात्या कोमलपङ्कजे पितृवनं यत्क्रोधवेतालके ।
द्वेषागारमिदं प्रदोषबहुलं सम्पद्विनाशोन्मुखः
सन्नीतिद्रुमवल्लरीमदगजो ह्यर्थानुरागः परः ॥४२॥

द्रव्यकी अधिक लालसा क्लेशरूपी हाथी के निवास के लिए विन्ध्याचल पर्वत के समान तथा उत्तम कार्यरूपी वन को जलाने के लिए दावाग्नि के समान है। कोमल परिणाम रूपी कमल को उखाड़ने के लिए आंधी के समान तथा क्रोध रूपी वेताल के नृत्य करने केलिए श्मशान के समान है। द्वेषादि दोषों का घर तथा पूर्वप्राप्त हुई सम्पत्ति का

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नाश करनेवाली तथा उत्तम नीति रूपी लता का मर्दन करनेकेलिए मदोन्मत्त हाथी के समान है ॥ ४२ ॥

क्रूरारिः प्रशमस्य धैर्यहितहृन्मोहस्यभूमिः परा
पापानां परिचायकः पदमदोऽनर्थापदां शाश्वतम् ।
लीलोद्यानमतीव शोभितमसद्ध्यानस्य हेतुः कले-
र्हेयोऽशुद्धपरिग्रहो बुधजनैः शोकस्य मूलं महत् ॥४३॥

यह अपवित्र परिग्रह शान्ति का पूरा दुश्मन, तथा धीरज और हित को हरनेवाला है। मोहकी निवासभूमि तथा पापों से प्रीति उत्पन्न करनेवाला है। नित्य ही अनर्थ और आपदाओं का स्थान तथा अपध्यान के क्रीड़ा करने का सुललित उद्यान है। झगड़े की जड़ तथा शोक का मूलकारण है। बुद्धिमानों को ऐसे दुःखदायी परिग्रह का सर्वथा त्याग करना चाहिए। अथवा परिग्रह का परिमाण कर ममत्वभाव घटाना चाहिए ॥ ४३ ॥

नित्यं मत्तवदाचरत्यतिरयादाविष्टवज्जायते,
लोभान्धो भवतिप्रकृष्टतरलो मूढो विचारे वरे ।
क्रूरः पापमतिः परापकरणे नित्योद्यतो निन्दकः,
क्षुद्रो द्रव्यपरिग्रहेण सततं धन्योऽप्यधन्यो नरः ॥४४॥

परिग्रह के कारण मनुष्य हमेशा पागल की तरह आचरण करता है तथा भूत से घिरे हुए मनुष्य की भांति बहुत जल्दी बेसुध होजाता है। लोभ से अन्धा हुआ मनुष्य चंचल प्रकृति वाला होकर सदा उत्तम विचारों से शून्य रहता है। लोभी का स्वभाव क्रूर हो-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जाता है तथा उसकी बुद्धि पाप कार्यों में ही प्रवृत्त होती है। लोभी मनुष्य सदा दूसरे का बुरा करने में तथा निन्दा करने में तत्पर रहता है। लालच के कारण मनुष्य क्षुद्र विचार वाला तथा भाग्यशाली व्यक्ति भी भाग्य हीन हो जाता है ॥४४॥

क्रोध से हानि

**यो निर्णयं कटुतापूर्णं विकृतिकृन्नरप्रदो नाशकृद्
ब्रह्मेनित्यसहोदरः शमरिपुः सत्कीर्तिवल्लीगजः।
यो मूलं विषपादपस्य विमलज्ञानाम्बुनेजःपतिः,
क्रोधोऽयं कुशलेच्छुभिः सकुशलैस्त्याज्यो विपत्कारणम् ॥४५॥**

क्रोध के वशीभूत हुआ मनुष्य नीच पुरुषों के बोलने योग्य निन्द्य वचन बोलता है। क्रोध शरीर और आत्मा में विकार उत्पन्न करने वाला है, तथा चित्त में उद्वेग उत्पन्न करने वाला है। क्रोध के द्वारा प्राणी अपना और पराया सब जला देते हैं। क्रोध अग्नि के समान आत्मा को जलाने वाला तथा शान्तिगुण का नाशक है। कीर्ति रूपी लता का नाश करने के लिए हाथी के समान है। यह क्रोध विष वृक्ष की जड़ है। निर्मल ज्ञान रूपी जल को सुखाने के लिए सूर्य के समान है, और विपत्तियों का मूल कारण है। ऐसा समझकर आत्महितेच्छु पुरुषों को चाहिए कि इस क्रोध शत्रु का सर्वथा त्याग करदें ॥४५॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्रोधः कीर्त्तिहरो जनेषु सततं प्रीतिप्रतिष्ठाज्वरः,
क्रोधः कष्टकुकर्मबीजवपनात्संसारसंवर्द्धकः।
क्रोधः शान्तिविघातकृन्निजपरज्ञानोद्विघाताश्रय -
स्तस्मादात्महितैषिभिर्बुधजनैः क्रोधः सदा हेयोऽनिशम्॥

क्रोध सुयश का नाश करने वाला तथा मनुष्यों में फैली हुई प्रतिष्ठा और प्रीति को क्रुश करने में बुखार के समान है। क्रोध दुःखदायी दुष्कर्मों का बीज बोकर संसार को बढ़ाने वाला है। क्रोध शान्ति का भङ्ग करने वाला तथा स्व और पर के भेद ज्ञान का विघात करने वाला है। इस लिए आत्मा का भला चाहने वाले बुद्धिमानों को इसक्रोध का बिलकुल त्याग कर देना चाहिए ॥४६॥

तापं संतनुते विवेकविनयौ नित्यं भिनत्ति स्वयं,
सौहार्दं सततं छिनत्ति कुरुतेऽत्युद्वेगितामादरात्।
सूतेऽवद्यवचः करोति कलहं भिन्ते हि पुण्योदयं,
दत्ते दुर्गतिदुर्मतीहि नियतं रोषः सदोषः सदा॥४७॥

क्रोध संताप को बढ़ाता है। विवेक और विनय को दूर करता है। क्रोध बहुत काल की गाढ़ी मित्रता को क्षण भर में नष्ट कर देता है। चित्त में निरन्तर उद्वेग बनाये रखता है। क्रोध पाप जनक वचनों का उच्चारण कराता है। कलह उत्पन्नकरता है। पुण्य का क्षय करता है। दुर्बुद्धि और दुर्गति को उत्पन्न करता है। अतएव यह रोष सर्वदा दोषों का जनक है। इसको छोड़ने से ही आत्मा का भला है ॥४७॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वृक्षं दाव इव द्रुतं दहति यो धर्मं च नीतिं लतां,
दन्तीवेन्दुकलां च राहुरिव यः स्वार्थं विहन्त्यम्बुदम्।
वायुश्चेव विलासयत्यनितरां पापावलीं चापदं,
कामं कर्मकषायदः समुचितः कर्तुं स कोपः कथम्॥४८॥

जैसे दावाग्नि वृक्षको जलाती है, ऐसे ही क्रोध धर्म को जला देता है। जैसे हाथी लता का भङ्ग करता है, इसी प्रकार क्रोध नीति का भङ्ग करता है। जैसे राहु चन्द्रमा को ग्रस लेता है, इसी तरह क्रोध आत्महित को ग्रस लेता है। जैसे वायु मेघों को एकत्र करता है, इसी प्रकार क्रोध पापकर्मों और आपदाओं का संचय करता है। क्या ऐसे कर्म और कषाय को उत्पन्न करनेवाले क्रोध को आत्मा में स्थान देना चाहिये? ॥ ४८ ॥

मानप्रकरण—

यस्मादुद्भवति प्रदुस्तरतरा व्यापन्नदीनां तति-
र्यस्मिन् शिष्टमतं च नास्ति सुगुणग्रामस्य नामाप्यहो।
यो नित्यं वहति प्रकोपदहनं यः कष्टवन्याकुलो,
मानाद्रिं हर तं द्रुतं किल दुरारोहं सुवृत्तैः सदा॥ ४९ ॥

जिस अहंकाररूपी पर्वत से अतिकष्ट से पार करने योग्य विपत्ति रूपी नदियाँ निकलती हैं। जिस मानरूपी पर्वत पर सज्जन पुरुषों के आदरकरने योग्य उत्तम गुण रूपी गाँव का नाम तक नहीं है। जो नित्य क्रोधरूपी अग्नि को धारण करता है। जो दुःखरूपी वृक्षों से व्याप्त है, तथा जिस पर चढ़ना अति कठिन है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सज्जन पुरुष विनय गुण और उत्तम कर्त्तव्य धारण कर इस अहंकार रूपी पर्वत से सदा दूर रहें ॥४९॥

भञ्जन्नीतिसुवीथिकां दृढशमालानं विनिघ्नन्मदा-
च्छृङ्खां सन्मतिनाडिकां विघटयन्दुर्वाग्रजः संकिरन् ।
नित्यं स्वागमवज्रमप्यगणयन्स्वैरं भ्रमन्भूतले,
नानर्थं जनयत्यहो किमु जनो नागो मदान्धो यथा ॥५०॥

अभिमानरूप मदोन्मत्त हाथी शान्तिरूप दृढ आलान-बन्धन स्थान को तोड़कर नीतिरूप मार्ग का भङ्ग करता हुआ, सम्यग्ज्ञान-रूप सांकल को तोड़कर दुर्वचनरूप धूल को उड़ाता हुआ अपने मार्ग में रुकावट डालनेवाले वज्र की परवाह न कर सदा पृथ्वी पर भ्रमण करता हुआ कौन २ से अनर्थ उत्पन्न नहीं करता है ॥५०॥

औचित्यं विनिहन्ति मेघरचनां तीव्रो नभस्वानिव,
प्रध्वंसं विनयं नयत्यहिरिव प्राणान्परप्राणिनाम् ।
कीर्तिं नागपतिर्यथा कमलिनीमुन्मूलयत्यञ्जसा,
मानो नीच इवोपकारमनिशं हन्ति त्रिवर्गं नृणाम् ॥५१॥

जैसे प्रचण्ड पवन मेघ को छिन्न भिन्न कर देता है, वैसे ही अभिमान उचित आचरण को नष्ट कर देता है। जैसे सर्प जीवों के प्राणों को हर लेता है, वैसे ही अहंकार विनय को हर लेता है। जैसे हाथी कमलिनी को मूल से उखाड़ देता है, वैसे ही गर्व तत्काल कीर्ति को जड़ से उखाड़ देता है, जैसे नीच पुरुष उपकार को

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विध्वंस कर देता है, वैसे ही अहंकार प्राणियों के त्रिवर्ग (धर्म अर्थ और काम) का विध्वंस कर देता है ॥५१॥

मानो दुःखनिधिर्भवेद्भवभृतां मानं विपत्संश्रिता,
मानेनैव भवन्ति मानरहिता मानाय देया क्षतिः ।
मानान्नास्ति परं यशोविहननं मानस्य दुःखं वशे
माने मा कुरु गौरवं हतसुखे हे मान! दूरं व्रज ॥५२॥

अभिमान दुःख का निधान है । विपत्तियाँ अभिमान के आश्रित हैं । अभिमान से सम्मान का क्षय होता है, अभिमान क्षय करने योग्य है । अभिमान से अधिक कीर्त्ति का नाश करनेवाला दूसरा कोई नहीं है । मान के अधीन दुःख रहता है । सुखका नाश करनेवाले अहंकार में अपना गौरव मत समझो । हे अहंकार तू दूर रह ॥५२॥

माया से हानि—

वन्ध्या या कुशलोद्गमेऽस्ति सततं सत्यार्कसन्ध्या च या,
माला या कुगतिस्त्रियाः किल महामोहेभशालास्ति या ।
शान्त्यम्भोजवने हिमं कुयशसो या राजधानी मता,
मायां तां परिमुञ्च दूरतरतो या दुःखदा सर्वदा ॥५३॥

जो माया पुण्य उत्पन्न करने में वन्ध्यास्त्री के समान है, अर्थात् कपट करने से कभी पुण्य उत्पन्न नहीं होता, केवल पाप ही उत्पन्न होता है । जो माया सत्यरूप सूर्य के छिपने पर होनेवाली सन्ध्या के समान है । जो माया कुगति रूप स्त्री की वरमाला

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

के समान है, अर्थात् जैसे स्वयंवर में कन्या वरमाला पहनाकर अपना पति स्वीकार करती है, इसी प्रकार दुर्गतिरूप स्त्री मायाचारी पुरुष को मायारूपी वरमाला पहनाकर अपना स्वामी बना लेती है। जो माया शान्तिरूप कमलके वन को जलाने के लिए बर्फ के समान है, तथा अपयश की राजधानी है। इस प्रकार अनेक दुःख उत्पन्न करनेवाली माया को सदा दूर ही से त्याग देना चाहिए ॥५३॥

मायां ये परवञ्चनाय रचयन्त्यज्ञानतः सादरं,
मायाजैर्विविधैरुपायनिकरैर्नित्यं मनःकल्पितैः ।
ते व्यामोहसखा विहाय सततं स्वर्गादिकं सत्सुखं,
स्वात्मानं परिवञ्चयन्ति सहसा स्वार्थघ्नचेष्टा नराः ॥

जो मनुष्य अपने मन की कल्पनाओं से अनेक उपाय सोचकर अज्ञानवश दूसरों को ठगते हैं, वे अज्ञानी अपनी आत्मा को स्वर्गादि के सुख से वञ्चित रखते हैं, तथा अपने स्वार्थ का अकस्मात् नाश कर बैठते हैं ॥५४॥

ये मायां दुरिताशया विदधतेऽविश्वासभूमिं परां,
स्वार्थघ्ना द्रविणाशया कुमतयो मोहाग्निदग्धा जनाः ।
ते पश्यन्ति तथा पतन्तमतुलं चानर्थसारं पुरः,
सानन्दं प्रपिबन्पयो न लगुडं मत्तो विडालो यथा ॥

जो पापी धन के लोभ से अविश्वास उत्पन्न करने वाली माया-छल करते हैं, वे मोहरूपी अग्नि से जले हुए दुर्बुद्धि अपने स्वार्थ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का नाश करते हैं । मायाचारी पुरुष कपट से होने वाले अतुल अनर्थ की परवाह नहीं करते हैं, जैसे बिलाव आनन्दपूर्वक दूध पीता है, लेकिन दूध पीने के कारण ऊपर से पड़ने वाले डंडे की परवाह नहीं करता है ॥ ५५ ॥

मायामत्र विधाय मुग्धजनतां ये वञ्चयन्तो जना
अज्ञानान्ध्यसमन्विताः खलु निजोत्कर्षं परं मन्वते ।
ते मोहावृतमानसाः कुमतयः पश्यन्ति नात्मच्युतिं,
दीपे प्रज्वलिते पतन्ति सततं मत्ताः पतङ्गा यथा ॥५६॥

जो अज्ञान से अन्धे हुए मनुष्य छल कपट कर दूसरे भोले जीवों को ठगते हैं, और इसी में अपनी उन्नति समझते हैं, उन दुर्बुद्धियों का चित्त मोह से ढका हुआ है, इसलिए वे अपनी होने-वाली हानि को नहीं देख सकते हैं, जैसे मोहित होकर दीपक में गिरते हुए पतङ्ग अपने होनेवाले नाश को नहीं समझते हैं ॥५६॥

लोभ से हानि—

यद्दुर्गामटवीं चरन्ति गहनं गच्छन्ति देशान्तरं,
गाहन्ते जलधिं गभीरमतुलक्लेशां कृषिं कुर्वते ।
सेवन्ते कृपणं पतिं मरगदं दुष्कृत्यमातन्वते,
कुर्वन्त्याचरणं विगर्ह्यमनिशं लोभाभिभूता जनाः ॥५७॥

लोभ से सताये गये (लोभी) मनुष्य भयानक वन में भ्रमण करते हैं । विकट देशान्तर में गमन करते हैं । गम्भीर समुद्र में प्रवेश करते हैं । अत्यन्त कष्ट देने वाली खेती करते हैं । कंजूस

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वामी की सेवा करते हैं। मृत्यु देनेवाले बुरे कार्य करते हैं, तथा संसार में निन्दा फैलाने वाले आचरण करते हैं ॥ ५७ ॥

सत्कृत्याम्बुधिकुम्भजोऽयमरणिः क्रोधानलोत्पादने,
मूलं मोहविषाङ्घ्रिपस्य जलदः प्रच्छादने सन्ततम् ।
प्रोद्यत्तापनिधेः कलेश्च सदनं व्यापन्नदीसागरः,
कामं कीर्त्तिलतानकलापकलभो लोभः सदा त्यज्यताम् ॥

यह लोभ सत्काररूपी समुद्र को सोखने के लिए अगस्त्य ऋषि के समान, तथा क्रोधाग्नि को उत्पन्न करने के लिए अरणि काष्ठ के समान है। मोहरूप विषवृक्ष की जड़, तथा सदा उत्तम गुणों को ढकने के लिए मेघ के समान है। अनेक संताप और कलह का घर, विपत्तिरूपी नदियों को आश्रय देने के लिए समुद्र के समान, तथा कीर्ति रूपी लताओं को नष्ट भ्रष्ट करने के लिए हाथी के बच्चे के समान है। इस लोभ को सज्जन पुरुष त्याग दें ॥ ५८ ॥

लोभो ज्ञानमहोदयाम्बुजविधुर्लोभो विवेकाम्बुद-
प्रोद्भ्रान्तानिलसंहतिः शुभमतिप्रोद्यल्लताकुञ्जरः ।
लोभः सत्यसुवृत्तनाशनपटुर्लोभो विपज्जन्मभू,ः
स्वर्गद्वार कपाट एष विबुधैस्त्याज्यो हिताकाङ्क्षिभिः ॥

लोभ ज्ञान की उन्नतिरूप कमल को संकुचित करने के लिए चन्द्र समान है। विवेक—स्वपर का भेदज्ञानरूप मेघ को उडाने के लिए तेज आंधी के समान है। उत्तम मतिरूपी लताओं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का भङ्ग करने के लिए हाथी के समान है। यह लोभ सत्य और सच्चरित्र का नाश करने में प्रवीण विपत्ति को जन्म देने वाली पृथिवी तथा स्वर्ग का द्वार बन्द करने वाला किवाड है, इस लिए आत्महितेच्छु बुद्धिमान् इस लोभ का बिल्कुल त्याग कर दें ॥५९॥

सन्तोष से लाभ--

जाता देवगवी सदा सुरतरुस्तेषां गृहे संस्थित-
श्चिन्तारत्नमुपागतं निजकरे सान्निध्यमाप्तो निधिः।
तद्वश्यं निखिलं जगच्च सुलभाः स्युर्मोक्षसत्सम्पदो,
ये सन्तोषमनल्पदोषदहने मेघं सदा बिभ्रति ॥ ६० ॥

सन्तोष महादोषरूप अग्नि को शान्त करने के लिए मेघ के समान है। इस को जो मनुष्य धारण कर लेते हैं, उन के घर में मानो कामधेनु और कल्पवृक्ष उत्पन्न हो जाते हैं। चिन्तामणि रत्न उन के हाथ में, तथा सम्पूर्ण धनभण्डार उन के समीप में आजाता है, और सम्पूर्ण संसार उन के वश में हो जाता है ॥ ६० ॥

दुर्जनता की निन्दा--

क्षिप्तः पाणिरहेर्मुखे वरतरं कुण्डे ज्वलद्वह्निके,
यज्झम्पापतनं परं विरचितं द्वागेव मृत्युप्रदम्।
निःक्षिप्तं गरलं वरं स्वजठरे यद्रोगसंशान्तये,
लब्धव्यं न कदापि दुर्जनपदं श्रेयःपदं वाञ्छता ॥६१॥

जिसने दुर्जनपना धारण किया, उसने मानो साँप के मुँह में हाथ देदिया, जलते हुए अग्निकुण्ड में छलांग मारली, रोग को शान्त

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करने के लिए तत्काल मृत्यु देने वाले ऐसे उग्र जहर को अपने पेट में रख लिया है। कल्याण की इच्छा रखने वाले को दुर्जनता कभी न करनी चाहिए ॥६१॥

यत्कीर्त्तिं प्रविनाशयत्यतितरां सूते विपद्वेदना
हन्ति स्वार्थमथो विवेकविनयौश्रेयःसुखं सन्मतिम्।
तादृक्षं कुमतिर्जनो वहति यद्दौर्जन्यमात्मापहं,
धान्ये तत्क्षतिदं करोति दहनं साध्येऽम्बुसंसेचनात् ॥

जो कीर्त्ति का बिल्कुल नाश कर देती है। विपत्तियों और वेदनाओं को उत्पन्न करती है। स्वार्थ का भङ्ग करती है। विवेक विनय कल्याण सुख और उत्तम बुद्धि का उच्छेद करती है। आत्मा का घात करने वाली ऐसी दुर्जनता को जो मनुष्य धारण करते हैं, वे मनुष्य जल सींचने से उत्पन्न होने वाले धान्य में उसको जलाने वाली अग्नि का प्रयोग करते हैं ॥६२॥

सौजन्यं भजतां वरं परिभवो दौर्जन्यदोषार्जिता
रम्या नो सुखसम्पदः सुविभवा विद्युच्छटाचञ्चलाः।
आयत्यात्महितं विभाति सहजं रम्यं कृशत्वं नृणां,
नो देहे परिणामकालविरसा शोफोद्भवा पीनता ॥

सज्जनता से यदि दरिद्रता बनी रहती हो तो भी सज्जनता ही धारण करनी श्रेष्ठ है। लेकिन दुर्जनता से सुख देनेवाली बिजली के चमत्कार के समान क्षणभङ्गुर सम्पत्ति का उपार्जन करना ठीक

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नहीं । जैसे मनुष्यों का स्वाभाविक कृशपना ही सुन्दर और परिणाम में सुख देने वाला होता है । किन्तु सूजन से उत्पन्न हुआ स्थूलपना न तो सुन्दर है और न परिणाम में सुखदेने वाला ही होता है ॥ ६३ ॥

दोषं न प्रकटीकरोति सुतरां ब्रूते परेषां गुणं
सन्तोषं परितो दधाति महतीमन्यर्द्धिमालोक्य वा ।
शोकं यत्परपीड़या प्रकुरुते नात्मप्रशंसां क्वचि-
न्नीतिं नोज्झति नो कुधं वितनुते सैष स्वभावः सताम् ॥

सज्जन दूसरों के दोष प्रकट नहीं करते, लेकिन गुणों को स्वयं प्रकट करते हैं। सत्पुरुष दूसरों की सम्पत्ति देखकर लोभ नहीं करते, किन्तु सन्तोष धारण करते हैं। उत्तम मनुष्य अन्यजीवों को पीड़ित देखकर दुःखी होते, आत्मप्रशंसा नहीं करते, तथा नीति का त्याग नहीं करते और न क्रोध ही करते हैं । ये सब सज्जनों के स्वाभाविक गुण हैं ॥ ६४ ॥

गुणवानों की सङ्गति से लाभ-

धर्मं निष्करुणो यशांस्यविनयो द्रव्यं प्रमत्तो जनो,
निर्बुद्धिः कवितां तपःशमदयाहीनोऽल्पबुद्धिः श्रुतम् ।
आलोकं गतलोचनश्चलमना ध्यानं सवाञ्छस्त्यसौ,
यः सङ्गं गुणिनां विहाय कुमतिः श्रेयःसुखं लिप्सति ॥

जैसे निर्दयी धर्म की, अभिमानी यश की, आलसी धन की, निर्बुद्धि कविता की, तप शम दयाहीन और अल्पबुद्धि आगम ज्ञान की,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अन्धा पदार्थ देखने की, चंचलचित्तवाला ध्यान की इच्छा करता हुआ हास्य का पात्र होता है। वैसे ही गुणवान् पुरुषों की सङ्गति के विना मोक्षसुख की इच्छा करने वाला दुर्बुद्धि भी हास्य का पात्र होता है ॥६५॥

यो नित्यं कुमतिं विहन्ति सततं मोहं विभिन्ते हृदो,
गृह्णाते विनयं रतिं च कुरुते धत्ते गुणानां ततिम् ।
कीर्त्तिं वर्द्धयति व्यपोहति गतिं दुष्टां प्रसूते शमं,
किं नैवं गुणिसङ्गमो जनयति स्वाभीष्टकार्यं नृणाम् ॥

गुणवानों की सङ्गति, कुमति और हृदय के मोह को दूर करती है। विनय रति-प्रेम आदि अनेक गुणों को उत्पन्न करती है। यश की वृद्धि और दुर्गति का नाश कर शान्ति उत्पन्न करती है। ऐसा कौन सा मनुष्यों का इष्ट कार्य है जिसको सत्पुरुषों की सङ्गति उत्पन्न नहीं कर सकती ॥ ६६ ॥

प्रासुं सन्मतिमापदां ततिमपाकर्त्तुं विहर्तुं सृतौ,
लब्धुं कीर्त्तिममाधुतां जरयितुं धर्मे समासेवितुम् ।
रोद्धुं पापमुपार्जितुं नियमतः स्वर्मोक्षलक्ष्मीं शुभां,
चेत्त्वं वाञ्छसि तर्हि मित्र!गुणिनां सङ्गं सदाङ्गीकुरु ॥

हे मित्र! यदि सुबुद्धि प्राप्त करने की, आपदा दूर करने की, सन्मार्ग पर चलने की, कीर्त्ति प्राप्त करने की, दुर्जनता का नाश करने की, धर्मसेवन करने की, पाप रोकने की, स्वर्ग और मोक्ष की

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लक्ष्मी को पाने की तुम्हारी इच्छा है तो तुम हमेशा सत्सङ्गति करो ॥ ६७ ॥

दुर्जनसङ्गति से हानि—

माहात्म्याम्बुजमण्डले तुहिनतिस्वोत्कर्षकालाम्बुद-
व्यूहे वातति नागति प्रियदयारामे च वज्रायते ।
क्षेमारोग्यसुखोदयाद्रिशिखरे ध्वान्तायते यः सदा,
सोऽयं दुर्जनसङ्गमो न विबुधैःसेव्यः कदापि क्वचित् ॥६८॥

दुर्जन का सङ्ग महिमारूप कमलसमूह को जलाने के लिए बर्फ के समान, आत्मोन्नतिरूप मेघमण्डल को उड़ाने के लिए पवन के समान, परमप्रिय दयारूप वाटिका को नष्ट करने के लिए हाथी के समान, कल्याण आरोग्य और सुख की उत्पत्तिरूप पर्वतके शिखर को तोड़ने के लिए वज्र के समान, उत्तममार्ग के दर्शन को रोकने केलिए अन्धकार के समान है । अतः बुद्धिमान् कभी दुर्जन का सङ्ग न करे ॥ ६८ ॥

इन्द्रियविजय से लाभ—

आत्मानं विषमाध्वना गमयितुं यो मत्तवाजीयते,
कार्याकार्यविवेकजीवहरणे यः क्रुद्धसर्पायते ।
पूर्वोपार्जितपुण्यशालदहने प्रोद्यद्दवाग्नीयते,
तं तीव्राक्षगणं विलुप्तनियमं जित्वा सुखी त्वं भव ॥

जो इन्द्रियाँ आत्मा को कुमार्ग में लेजाने के लिए दुष्ट घोड़े के समान हैं, कर्त्तव्य अकर्त्तव्य के ज्ञान रूप प्राणों का हरण करने के

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लिए क्रोध को प्राप्त हुए सांप के समान हैं। पूर्वोपार्जित पुण्यरूप वृक्ष को जलाने के लिए दावाग्नि के समान हैं। हे भद्र पुरुषो! व्रत नियम का लोप करने वाली इन बलवती इन्द्रियों को जीतकर सुखी बनो ॥६९॥

संहर्त्तुं नययुक्तरूपद्रतिमलं ज्ञानं विवेकोद्भवं,
शीघ्रं नाशयितुं विधातुमनिशं सन्तापदुःखव्रजम्।
निर्मातुं सततं कुबुद्धिलहरीं संसारमूलं च वै,
यः शक्नोति बलात्तमिन्द्रियगणं सद्यो वशं प्रापय ॥

जो इन्द्रियाँ नीतिमार्ग और जड़ चेतन के भेदज्ञान को तत्काल नष्ट करने में समर्थ हैं। निरन्तर मानसिक और शारीरिक दुःख को उत्पन्न करने में, प्रवीण हैं। हमेशा कुबुद्धि रूप जहर की लहर और संसार के दृढ़ मूल कारण राग द्वेष को आविर्भूत करने में पूर्ण समर्थ हैं। इस लिए हे भव्य पुरुषो! इन इन्द्रियों को अति शीघ्र वश में करो ॥७०॥

उन्मार्गं नयति प्रकाममखिलान्बध्नाति मोहव्रजे,
दत्तेऽलं विपदः करोति नितरां सद्बोधशून्यं जनम्।
नित्यं क्लेशयति प्रमादबहुलान्संसारदावानले,
मत्तो योऽक्षगणस्तमेव सततं वश्यं करोत्वप्रियम् ॥

ये मदोन्मत्त इन्द्रियाँ समस्त संसारी जीवों को कुमार्ग में लेजाती और मोहजाल में फँसाती हैं। बड़े २ दुःख देती और प्राणियों को सद् ज्ञान शून्य बना देती हैं। तथा प्रमादी जीवों को संसार रूपी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दावाग्नि में नित्य जलाती रहती हैं। इन शत्रुभूत इन्द्रियों को सदा वश में रखना चाहिए ॥ ७१ ॥

लब्धुं धर्ममनेकदोषहरणं संसारनिःसारकं,
प्राप्तुं पुण्यसुरद्रुमं च सकलाभीष्टप्रदं दुर्लभम् ।
संहर्तुं विपदं भवाब्धिजनितां चेत्तेऽस्ति कौतूहलं,
साधो! संहर शीघ्रमिन्द्रियगणं स्वेच्छाविहारात्सुकम् ॥

हे साधो ! अनेक दोषों को हरनेवाले और संसार से पार करनेवाले धर्म को प्राप्त करने की यदि तुम्हारी इच्छा है । समस्त मनोरथ को पूरा करनेवाले दुर्लभ पुण्यरूप कल्पवृक्ष को प्राप्त करने की यदि तुम्हारी उत्कण्ठा है। संसारसमुद्र में उत्पन्न होनेवाली सम्पूर्ण विपत्तियों का संहार करने का कौतुक यदि तुम्हारे हृदय में जागृत हुआ है तो इन पाँचों इन्द्रियों की स्वच्छंदप्रवृत्ति को शीघ्र रोक दो ॥ ७२ ॥

लक्ष्मी का स्वभाव—

नीचं गच्छति निम्नगेव मदिरेवोन्मत्ततां पुष्यति,
निद्रावद्विनिहन्ति चेन्द्रियगणं दत्तेऽन्धतां रात्रिवत् ।
धत्ते चञ्चलतां बलेन सततं तृष्णां नगत्युत्कटां,
ज्वालावत्कमला जलेषु नितरां संभ्राम्यति स्वेच्छया ॥

लक्ष्मी नदी के समान नीचे अर्थात् नीच पुरुषों के पास जाती है । मदिरा-शराब के समान पागल बना देती है । निद्रा के समान इन्द्रियों को विवेकशून्य करती है । रात्रि के समान अन्धा बनादेती

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

है। सर्वो चंचलता धारण करती है। अग्नि की ज्वाला की भांति तीव्रतृष्णा (प्यास, लालसा) को उत्पन्न करती है। जल में कमल की तरह यह लक्ष्मी सदा अपनी इच्छा अनुसार मूर्खों में घूमती फिरती है ॥७३॥

अम्बे संस्पृहयन्ति बान्धवजना मुष्णन्ति चौरा नृपा
दण्डेनाददते बलेन दहनो भस्मीकरोति द्रुतम्।
तोयं प्लावयति क्षणादवनिगं यक्षा हरन्त्याकरात्,
पुत्रा दुश्चरिता नयन्ति विलयं धिग्बह्वधीनं वसु ॥७४॥

जिस धन के लिए भाई भाई परस्पर झगड़ते हैं। चोर चुरा लेते हैं। राजा दण्ड देकर बलपूर्वक छीन लेते हैं। अग्नि शीघ्र भस्म कर देती है। पृथिवी में गड़े हुए धन को पानी बहा लेजाता है। यक्ष खजाने से हर लेते हैं। दुश्चरित्र पुत्र नष्ट कर देते हैं। इस तरह अनेक मनुष्यों की अधीनता में रहने वाले धन को धिक्कार है ॥७४॥

दुष्टानां नितरां कठोरवचनं श्रुत्वा तदुक्तं जवा-
द्भूभावं परिवृत्य कृत्रिममुदं संदर्शयन्ति क्षणम्।
सेवायां न विदन्ति किञ्चिदकृतज्ञस्यापि निर्विण्णतां,
वित्तार्थं विबुधा जना अपि महाक्लेशान्महन्तेऽद्भुतम् ॥

धन के लोभी दुष्टों के अति कठोर अपमानजनक वचन सुन कर तत्काल अपने हृदय के भाव बदल कर बनावटी हर्ष प्रकट करते हैं। किंचित् उपकार को नहीं मानने वाले मनुष्यों की सेवा करने

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पर भी खेदखिन्न नहीं होते हैं। बड़ा आश्चर्य है कि विद्वान् पुरुष भी धन के लिए बड़े २ कष्ट सहते हैं ॥७५॥

या श्रीः सर्पति नीचमम्बुधिपयःसङ्गादिवेहाब्जिनी-
संसर्गादिव कण्टकाकुलपदा धत्ते पदं न क्वचित् ।
या हालाहलसन्निधेरिव नृणां देहाद्ररेच्चेतनां,
ग्राह्यं धर्मपदे निधोज्य सुजनैस्तस्याः फलं दुर्लभम् ॥

ऐसी लोकोक्ति है कि लक्ष्मी समुद्र से निकली है। समुद्र में जल कमलिनी और विष भी रहता है। जल की सङ्गति करने से यह लक्ष्मी भी नीच पुरुषों के पास जाती है, अर्थात् जैसे जल नीचे की ओर जाता है वैसे ही लक्ष्मी भी नीच पुरुषों के पास जाती है। कमलिनी के संसर्ग से लक्ष्मी के पैर में कांटा लग गया, इस लिए यह कहीं पर पाँव स्थिर नहीं रखती है। विष के साथ रहने से यह भी मनुष्यों की चेतना-ज्ञानशक्ति को हर लेती है। इस लिए सज्जनों को चाहिए कि इस लक्ष्मी को धार्म्मिक कार्यों में लगा कर इससे अनुपम लाभ उठावें ॥७६॥

दानमहिमा-

चारित्रं ननुते ददाति विनयं बोधं नयत्युन्नतिं,
शान्तिं पुष्यति सत्तपः प्रबलयत्युल्लासयत्यागमम् ।
पुण्यं पल्लवयत्यघं दलयति स्वर्गापवर्गश्रियं,
दत्ते पूतधनं सुपात्रनिहितं स्वाभीष्टसौख्यप्रदम् ॥७७॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुपात्र को दिया गया दान चारित्र की वृद्धि करनेवाला, विनय—नम्रता उत्पन्न करने वाला है। ज्ञान को बढ़ाने वाला, और शान्ति को पुष्ट करने वाला है। सम्यक् तपस्या को प्रबल करने वाला, और आगम का प्रकाश करने वाला है। पुण्य उत्पन्न करने वाला और पाप का नाश करने वाला है, तथा स्वर्ग और मोक्ष की लक्ष्मी को देनेवाला है। उत्तम पात्र के अर्थ लगाया गया पवित्रधन सब मनोवांछित सुख को देता है ॥ ७७ ॥

दानं सौख्यकरं सुतारकमहो संसारदुःखाम्बुधेः,
स्वर्मोक्षप्रदमात्मनो हितकरं सद्बुद्धिशान्तिप्रदम् ।
दुःखघ्नं भवनापजातहरणं सम्पत्करं सन्मतं,
दातव्यं विबुधैर्धनं स्वकुशलं वाञ्छद्भिरत्यादरात् ॥७८॥

दान सुखदेनेवाला तथा सांसारिकदुःखरूप समुद्र से पार करने वाला है। स्वर्ग मोक्ष को देनेवाला तथा आत्मा का हित करने वाला है। सत्पुरुषों ने इसे सद्बुद्धि और शान्ति को देनेवाला दुःख का संहार करनेवाला तथा सम्पत्ति को उत्पन्न करनेवाला माना है। अपना भला चाहने वाले बुद्धिमानों को बड़े आदर से दान करना चाहिये ॥ ७८ ॥

लक्ष्मीर्वाञ्छति तं मतिर्मृगयते कीर्तिश्च तं पश्यति,
प्रीतिस्तं परिचुम्बतीह सततं स्वास्थ्यं सदा सेवते ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आलिङ्गत्यपि पुण्यसंहतिरथ श्रीमुक्तिबाला वरा,
नित्यं तं वृणुते ददाति विभवं धर्माय यो मानवः।७९।

जो मनुष्य अपनी सम्पत्ति को धार्मिककामों में लगाता है, उसकी लक्ष्मी इच्छा करती है, उसकी बुद्धि ढूंढती है, कीर्त्ति उस की ओर देखती है, प्रीति उसका चुम्बन लेती है, नीरोगता उस की सदा सेवा करती है। पुण्यपङ्क्ति उसका आलिङ्गन करती है, सुन्दर मुक्तिरूप कन्या उसे वर लेती है ॥ ७९ ॥

आसन्ना गृहदासिका रतिरयं दातेति सोत्कण्ठया,
कीर्त्तिः स्निग्धतरा रमा परिचयं बुद्धिर्दधाति स्थितिम्।
चक्रयर्द्धिः करगा सुमुक्तिललना स्यात्सादरा कामुकी,
क्षेत्रे शुद्धधिया मुदा वपति यः सद्वित्तबीजं निजम् ॥

जो मनुष्य उत्तम पात्ररूप क्षेत्र में अपने धनरूप बीज को हर्ष पूर्वक बोता है, उस दानी के पास रति-प्रीति बड़ी उत्कण्ठा से घर की दासी के समान सदा बनी रहती है। कीर्ति उससे स्नेह करती और लक्ष्मी उससे सम्बन्ध करती है। उसकी बुद्धि स्थिर रहती और चक्रवर्त्ती की ऋद्धि उसकी हथेली में आजाती है, तथा मुक्तिरूप स्त्री उसकी आदर पूर्वक इच्छा करती है ॥ ८० ॥

तप की महिमा—

यत्प्रागर्जितकर्मभूधरपविर्यन्मारदावानल-
ज्वालाजालजलं यदुत्कटतराज्ञाहीन्द्रमन्त्राक्षरम्।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यद्विघ्नान्धकृतिप्रणाशदिवसो यन्मुक्तिलक्ष्मीलता-
मूलं तद्विधिना वरं कुरु तपो भूत्वा मुदा निःस्पृहः ॥

जो तप पूर्वोपार्जित कर्मरूप पर्वत का नाश करने के लिए वज्र के समान है। कामाग्नि की ज्वालाओं को शान्त करने के लिए जल के समान है। उग्र इन्द्रियरूप सर्प को वश में करने के लिए मन्त्र के समान है। विघ्नरूप अन्धकार का नाश करने के लिए दिवस के समान है, तथा मुक्ति रूप लता का मूल है। अत एव सांसारिक विषयवासना की इच्छा न कर इस तप का विधिपूर्वक आचरण करना चाहिए ॥ ८१ ॥

यस्मान्नश्यति दुष्टविघ्नवितनिः कुर्वन्ति दास्यं सुराः,
शान्तिं याति बली स्मरोऽस्तपटली दाम्यत्यहो सर्पति।
कल्याणं शुभसम्पदोऽनवरतं यस्मात्स्फुरन्ति स्वयं,
नाशं याति च कर्मणां समुदयः स्तुत्यं न किं तत्तपः॥

जिससे दुष्ट विघ्नों के समूह का नाश होता है। देवता दास बन जाते हैं। बलवान् कामदेव शान्त होजाता है। इन्द्रियों का दमन होता है। सुख सम्पत्ति की निरन्तर वृद्धि होती है। कर्मों के समूह का स्वयं नाश होजाता है। ऐसा तप कैसे स्तुति करने योग्य नहीं हो सकता ॥८२॥

नान्यः स्याद्विपिनं यथाज्वलयितुं शक्तः कृशानुं विना,
स्याच्छक्तो वनजानलं शमयितुं नान्यो यथाम्भोधरात्।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मेघं नाशयितुं यथैव मरुतं हित्वा न कश्चित्क्षम-
स्तद्वत्कर्मचयं विना न तपसा हन्तुं समर्थः परम् ॥८३॥

जैसे वन को भस्म करने के लिए अग्नि के सिवा दूसरा कोई समर्थ नहीं है। वन में लगी हुई अग्नि को शान्त करने को मेघ के सिवा किसी दूसरे की सामर्थ्य नहीं है। मेघ का विध्वंश करने के लिए पवन को छोड़कर अन्य कोई समर्थ नहीं है। इसी प्रकार कर्मसमूह का नाश करने के लिए तप के सिवा दूसरा कोई समर्थ नहीं है ॥८३॥

सन्तोषः खलु यस्य मूलमनिशं पुष्पं शमश्चाभयं,
पत्रं यस्य समस्ति चेन्द्रियजयः शाखा प्रवालोद्गमः।
शीलं यस्य सुवृत्तयुक्तमतुलं श्रद्धाम्बुसेकोवरं,
दत्ते मोक्षफलं विकाशममये सोऽयं तपःपादपः ॥८४॥

जिस तप रूपी वृक्ष की जड़ सन्तोष, और श्रद्धा जल सींचने के समान है। शान्ति जिसके पुष्पों और अभयदान पत्तों के समान है। इन्द्रियों का जय जिसकी डालियों और सम्यक् चारित्र सहित शील-व्रत प्रवाल कोंपलों के समान है। पूर्ण विकाश होने पर जिस वृक्ष का फल मोक्ष होता है। ऐसे अनुपम तप रूपी वृक्ष का आश्रय लेना चाहिए ॥८४॥

भावना की महिमा—

छोवे चन्द्रमुखीकटाक्षरचना व्यर्था यथा लुब्धके,
सेवा ग्रावणि पद्मरोपणमिवाम्भोवर्षणं चोषरे।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वाध्यायाध्ययनं प्रदानसुतपः सद्भावपूजादिकं,
निःशेषं खलु निष्फलं शुभतरां नित्यं विना भावनाम् ॥

जैसे नपुंसक पर चन्द्र के समान मुखवाली सुन्दर स्त्री के कटाक्ष तथा लोभी की सेवा निष्फल होती है। पत्थर पर कमल लगाना तथा ऊसर जमीन में जल बरसना व्यर्थ होता है। वैसे ही स्वाध्याय पठन पाठन दान तप भाव सहित पूजा आदि सब उत्तम गुण एक शुभभावना के बिना निष्फल हैं ॥८५॥

सर्वं ज्ञातुमथो सुपुण्यमखिलं संप्राप्तुमत्युत्कटं,
क्रोधं हन्तुममोघवाञ्छितफलं भोक्तुं तपः सेवितुम् ।
संसारार्णवपारमल्पसमयाल्लब्धुं यदीहा भवे-
त्तिग्मं भावय भावनां हृदि तदा त्यक्त्वा सखे! चापलम् ॥

हे मित्र! यदि समस्त पदार्थों को जानने की, सब श्रेष्ठ पुण्य को प्राप्त करने की, तीव्र क्रोध का नाश करने की, मनोवाञ्छित फल का भोग करने की, तपस्या करने की, तथा थोड़े ही समय में संसार समुद्र को पार करने की तुम्हारी इच्छा है, तो चपलता का त्याग कर हृदय में हमेशा भावना का चिन्तन करो ॥ ८६ ॥

संसारार्णवसन्तरिं प्रशमदां सन्तोषमञ्जीविनीं,
नित्यं मारदवाग्निमेघपटलीं मुक्तेः पथे वेसराम् ।
मन्मार्दवगुणसुवागुरां बलवतीं रागादिशैलाशनिं,
हे साधो! भज भावनां किमपरैः कामार्थसिद्धिप्रदाम् ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हे साधो ! यह भावना संसारसमुद्र से पार करने के लिए नाव के समान है। शांति तथा सन्तोष उत्पन्न करने वाली और कामाग्नि को शान्त करने के लिए मेघ मंडल के समान है। मोक्षरूपी मार्ग पर चलने के लिए अश्व के समान तथा उन्मत्त इन्द्रियरूपी मृग को वश में करने के लिए दृढ़ जाल के समान है और रागादि दोष रूपी पर्वत का नाश करने के लिए वज्र के समान है। अतएव हे मुने ! दूसरी सब झंझटों को छोड़ कर धर्म अर्थ काम और मोक्ष को देने वाली इस भावना का सेवन करो ॥ ८७ ॥

दत्तो वित्तचयः सदाभ्यसनतो विज्ञातमर्हद्वचः,
निर्विघ्नेन कृताः क्रियाः खलु महीशय्या समासेविता
तप्तं तीव्रतपः सुचीर्णमनघं सद्वृत्तमत्यादरा-
न्न स्वान्ते यदि भावना शुभतरा तर्ह्येष सर्वो वृथा ॥

॥ ८८ ॥

जिसने बहुत द्रव्य का दान किया। निरन्तर अभ्यास करके जिनागम का ज्ञान प्राप्त किया। सम्पूर्ण क्रियाओं का निर्विघ्न पालन किया। पृथ्वी पर शयन किया। घोर तपस्या तपी। निर्दोष चारित्र का बड़े प्रेम से आचरण भी किया। यदि उसने अपने हृदय में शुभ भावना का चिन्तन नहीं किया तो उसकी उक्त सब क्रियाएँ निष्फल हैं ॥ ८८ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वैराग्यमहिमा—

दृसाक्षद्विरदाङ्कुशं विरतिसद्योषासुलीलागृहं,
सत्कल्याणसुपुष्पकाननमथाकल्याणमालिन्यकृत् ।
दुश्छाखामृगशृङ्खलं शिवपथे रम्यो रथो घस्मर-
सम्प्रोद्यज्ज्वरभञ्जनं भज सखे! वैराग्यमेवाभयम् ॥

हे मित्र! वैराग्य इन्द्रिय रूप मदोन्मत्त हाथी को वशीभूत करने के लिए अङ्कुश के समान है। त्याग रूपी स्त्री के क्रीड़ा करने का घर और कल्याण रूपी पुष्पों का बगीचा है। अमङ्गल का नाश करनेवाला तथा मन रूपी मर्कट को बांधने के लिए सांकल के समान है। मोक्षमार्ग पर चलने के लिए रथ के समान और काल ज्वर का संहार करनेवाला है। अतएव हे मित्र! संसार के भय से मुक्त करने वाले इस वैराग्य का ही सेवन करो ॥ ८९ ॥

वैराग्यं जयमेति भूमिवलये स्वर्गापवर्गप्रदं,
यस्यैवाश्रयतः सुरासुरनराः स्वेष्टार्थसिद्धिं गताः ।
अप्रज्ञाः परवञ्चका अपि जना जाताः सुपूज्या यत-
स्तस्मादाश्रय तत्सखे! किमपरैः संसारसंवर्द्धनैः ॥९०॥

स्वर्ग और मोक्ष देनेवाला वैराग्य भूमण्डल पर सदा जयवंत रहे, अर्थात् प्राणी इसका सदा सेवन करें। जिस वैराग्य का आश्रय लेकर सुर असुर और मनुष्यों ने इष्ट पदार्थ को प्राप्त किया है। बुद्धिहीन और दूसरों को ठगने लूटने वाले जीव भी जिसके प्रताप

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

से संसार में पूज्य हुये हैं। अतएव हे मित्र! संसार की वृद्धि करने वाले दूसरे सब कामों को छोड़ कर इस वैराग्य का ही पालन करो ॥ ६० ॥

कालोऽयं दिनमासवर्षविधया लोकत्रयीभक्षको,
याता यान्ति च कालचक्रविवरं यास्यन्ति लोकाः सदा।
लक्ष्मीस्तुङ्गतरङ्गभङ्गचपला विद्युच्चलं जीवनं,
तस्मात्सौम्यजनाः! समाश्रयत भो वैराग्यमेवाचलम्॥

काल दिन महिने और वर्षों द्वारा तीन लोक के पदार्थों का भक्षण करता है। समस्त प्राणी इस कालचक्रमें गिरकर नाशको प्राप्त हुए हैं हो रहे हैं और होएँगे। लक्ष्मी जल की तरङ्ग के समान और जीवन बिजली के समान चंचल है। अतएव हे शान्तपुरुषों ! स्थिर वैराग्य को धारण करो ॥६१॥

भोगान्कृष्णभुजङ्गभोगविषमान्राज्यं रजःसन्निभं,
बन्धून्बन्धकरान्कषायनिचयं हालाहलाल्लोपमम्।
भूतिं भूतिसमां तृणेन सदृशं स्त्रैणं विचिन्त्य द्रुत-
मासक्तिं परितस्त्यजन्प्रवृणुते मोक्षं विरागी यतः॥

इन्द्रियों के विषय काले सांप के समान, राज्य धूल के समान, बन्धुलोग बन्ध के कारण, क्रोधादि कषाय विष के समान, ऐश्वर्य भस्म के समान तथा स्त्रीसमूह तृण के समान है, ऐसा समझकर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संसार के सम्पूर्ण पदार्थों से उदासीन रहे। क्योंकि वीतरागी ही मोक्ष को प्राप्त कर सकता है ॥ ९२ ॥

सामान्य उपदेश–

सर्वस्वार्पणवृत्तितस्तनुभृतां यत्नो महान् रक्षणे,
संसारार्णवतारकस्य सुगुरोश्चोपासना मुक्तिदा।
अर्हद्भक्तिगुणानुरक्तिरनघा पात्रेषु दानं क्षिता–
वेतान्येव फलानि मानवतरोर्जातस्य नान्यत्फलम् ॥

सर्वस्व देकर प्राणियों की रक्षा करना, संसारसमुद्र से पार करनेवाले सुगुरु की मोक्ष देनेवाली सेवा करना, अरिहन्त देव की भक्ति करना गुणों में प्रीति रखना तथा पात्रदान देना, ये सब प्राप्त हुए मनुष्यजन्म रूपी वृक्ष के फल हैं, और दूसरा कोई फल नहीं है ॥ ९३ ॥

भक्तिं योग्यतरां जिने कुरु गुरोर्बोधं शृणु श्रद्धया,
पात्रे दानमनुत्तमं कुरु मनोवृत्तिं वशे स्थापय।
क्रोधाद्यान्तरवैरिवर्गमनिशं चोन्मूलय प्रेमतो-
दीने धेहि दयां सदा जिनवचः श्रद्धेहि मुक्तिं वृणु॥

जिनेन्द्रदेव की योग्य सेवा-भक्ति करो। निर्ग्रन्थ गुरु का ज्ञानोपदेश सुनो। सुपात्र को श्रद्धापूर्वक दान दो। प्रेमपूर्वक दीनों पर दया करो। जिनेन्द्रदेव के वचनों पर श्रद्धा करो। मन के विचारों को वश में रखो, तथा क्रोधादि अन्तरङ्ग शत्रुओं को जड़ से उखाड़ कर फेंक दो, और शिवरमणी को वरो ॥ ९४ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सद्भक्त्याऽर्हत आदरेण विनमन्कुर्वन् तदीयां पुनः,
पूजामारचयन् तदीयवचसि श्रद्धाभरं भावयन् ।
तद्व्याख्यानपदार्थभारमनिशं चित्तेन संभावयन्,
रागद्वेषपटच्चरैः परिहृतं स्वं याहि मोक्षायनम् ॥

अरिहन्त भगवान् को आदरपूर्वक नमस्कार कर भक्तिपूर्वक पूजा करे, तथा इनके वचनों का विश्वास कर आगम में वर्णन किये गये तत्त्वों का चित्त में मनन करे, और रागद्वेष रूपी चोरों से आत्मा की रक्षा करता हुआ मोक्ष मार्ग पर गमन करे ॥ ९५ ॥

कीर्त्तिर्दिक्षु यथाऽनिशं प्रसरति प्रोद्यत्तमोपेशप्रभा-
तुल्या स्फातिमुपैति सद्गुणततिः स्वान्योदयं कुर्वती ।
वृद्धिं याति यथा सुधर्मविटपी कर्मातपक्षोदकृ-
च्छ्रद्धासज्जलसेचितोऽध्वनि तथा कार्यं सदा वर्त्तनम्॥

जिस मार्ग पर चलने से चन्द्रमा की कान्ति के समान कीर्ति निरन्तर बढ़ती रहे, अपने और दूसरे की उन्नति करनेवाले गुण प्रतिदिन उन्नत होते जावें तथा श्रद्धारूपी जल से सींचा हुआ कर्म-संताप को दूर करनेवाला धर्म रूपी वृक्ष बढ़ता रहे, उसी मार्ग पर सदा चलना चाहिये ॥ ९६ ॥

हस्ते दानमनन्तपुण्यफलदं मूर्ध्नि प्रणामो गुरोः,
वाणी सत्ययुता मुखे श्रवणयोः सत्यं श्रुतं शाश्वतम् ।
स्वान्ते वृत्तिरभेदभावलसिता बाह्वोः शुभं पौरुषं,
चैश्वर्येण विनाप्युदारमनसामेतन्महामण्डनम् ॥९७॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दान चार प्रकार के हैं, अभयदान औषधदान आहारदान और ज्ञानदान। अनन्त पुण्य उत्पन्न करने वाले इन दानों को यथाशक्ति प्रति दिन करना, गुरु को मस्तक नवाकर प्रणाम करना, मुख से सत्य वचन बोलना, कानों से सदा शास्त्र सुनना अन्तः करण से सब के साथ समानभाव रखना, भुजाओं से उत्तम पुरुषार्थ करना, ये सब उदार चित्त वाले महापुरुषों के बिना वैभव (ऐश्वर्य) के आभूषण हैं ॥६७॥

मुक्त्वेमां जननाटवीं जिगमिषुश्चेत्वं सदा सौख्यदां,
वर्यां मुक्तिपुरीं तदा न वसतिः कार्या कषायद्रुमे ।
श्लाघाऽप्यस्य ददाति मोहमचिराच्चित्ते प्रसन्ने यतो -
यस्माज्जन्तुरयं पदात्पदमपि स्वैरं न गन्तुं प्रभुः ॥६८॥

यदि तुम इस संसार रूपी भयानक वन को छोड़कर अनन्त सुख देनेवाली सुन्दर मुक्तिरूप नगरी को जाना चाहते हो, तो कषाय रूपी वृक्ष के नीचे निवास मत करो। क्योंकि इस कषाय की प्रशंसा भी स्वच्छ चित्त में मोह उत्पन्न करती है, जिससे यह प्राणी स्वच्छन्द एक पैर भी आगे बढ़ाने को समर्थ नहीं होता है ॥६८॥

उपसंहार—

मन्दानामतिशुद्धबोधजनकं सन्मार्गसंयोजकं,
ग्राह्यं मध्यमधीजुषां रुचिकरं वैराग्यपुष्टिप्रदम् ।
चित्तस्वास्थ्यकरं सदा शुभधियां सन्तोषवृद्ध्यावहं,
नीतेर्दीपकभूतमेतदनिशं चित्ते सदा भासताम् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यह नीतिदीपक ग्रन्थ मन्द बुद्धिवालों को विशुद्धबोध देनेवाला और सत्यमार्ग पर लगानेवाला है। मध्यम बुद्धिवालों के ग्रहण करने योग्य रुचिकर तथा वैराग्य को दृढ़ करने वाला है। निर्मल बुद्धिवालों का चित्त निर्मल करने वाला तथा सदा सन्तोष की वृद्धि करने वाला है। अतएव यह ग्रन्थ निरन्तर मनुष्यों के चित्त में प्रकाशित होता रहे ॥ ९९ ॥

आसँल्लिम्बडिसम्प्रदायतिलकाः श्रीदेवजीस्वामिन-
स्तच्छिष्यो नथुजिद्गुरुर्वरकृतिस्तत्सेवकः कानजित् ।
सिन्दूरप्रकरं विना विषमतामाश्रित्य वृत्तोद्भवां,
चेतोरञ्जकनीतिदीपकशतं बोधाशये निर्ममे ॥ १०० ॥

लिम्बड़ी सम्प्रदाय में तिलकायमान श्रीदेवजी स्वामी हुए । इन के शिष्य कर्त्तव्यपरायण गुरु श्री नत्थूजी स्वामी हुए । इनके शिष्य कानजी स्वामी ने सोमप्रभाचार्यविरचित सिन्दूरप्रकर का सहारा लेकर सरल पद्यों में यह चित्त प्रसन्न करनेवाला नीतिदीपक शतक ग्रन्थ स्व पर का ज्ञान प्राप्त करने के लिए बनाया ॥ १०० ॥

॥ इति श्रीनीतिदीपकशतकं समाप्तम् ॥

पुस्तक मिलने का पता —
अगरचन्द भैरोंदान सेठिया
मोहल्ला मरोटियों का
बीकानेर—(राजपूताना)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्री ॥

शुद्धिपत्रम् ।

पृष्ठ	पङ्क्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४	४	तिष्ठं.त	तिष्ठन्ति
१३	१६	मुक्तिसखा	मुक्तिसखी
१५	१	जिवों	जीवों
१५	१४	वीतरागादेव	वीतरागदेव
१०	२१	पापपुञ्जवि लीन	पापपुञ्ज विलीन
२१	१५	सिह	सिंह
२१	१९	लुखरूप	सुखरूप
२५	७	दुष्ट.मों	दुष्कर्मों
२७	३	दृढ़	दृढ
३१	१६	.:	:,
३४	१८	सवाञ्छत्यसौ	स वाञ्छत्यसौ
४१	१६	सतत स्वास्थ्य	सततं स्वास्थ्यं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only